Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
October to December 2024, E-Journal, Vol. I, Issue XLVIII, ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन

निशा यादव* डॉ. कल्पना शर्मा **

*** शोधार्थी, शासकीय क.रा.क. महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) भारत**
**** विभागध्यक्ष, जे.सी. मिल कन्या स्नातकोत्तर महाविद्यालय, ग्वालियर (म.प्र.) भारत**

प्रस्तावना –परिवार बच्चों की प्रथम पाठशाला होती है और माता उसकी प्रथम गुरू। जन्म के पश्चात् बच्चे खाना–पीना, हँसना–बोलना, चलना–फिरना, खेलना–कूदना, पढ़ना–लिखना आदि समस्त गतिविधियाँ परिवार में ही सीखते हैं। घर में ही बालक बालिकाओं का शारीरिक, मानसिक, क्रियात्मक, संवेगात्मक, भाषा व सामाजिक विकास होता है। वे विभिन्न परिस्थितियों में समायोजन करना सीखते हैं। माता पिता व परिवार के सदस्यों की आदतें, उनके निर्णय लेने के तरीके व अन्य लोगों के प्रति उनका आचरण आदि नैतिक मूल्यों की शिक्षा देते हैं। घरेलू महिलाएँ अपने बच्चों के सम्पर्क में अधिक रहती हैं इसलिये बच्चों के आचरण व नैतिक मूल्यों पर उनका प्रभाव अधिक पड़ता है। प्रत्येक कार्य, निर्णय में वे उनकी मदद लेते हैं। कामकाजी महिलाओं 6–8 घंटे लगभग घर से बाहर रहना पड़ता है। इसलिए उनके बच्चे परिवार के अन्य सदस्य व आया के सम्पर्क में अधिक रहते हैं। माता की अनुपस्थिति बच्चों को अपने कार्य स्वयं करने तथा निर्णय स्वयं लेने के लिये प्रेरित करती है। अधिक आवश्यकता पड़ने पर ही बच्चे परिवार के अन्य सदस्यों से मदद लेते हैं। इस प्रकार घरेलू महिलाओं के बच्चों की तुलना में कामकाजी महिलाओं के बच्चे जल्दी आत्मनिर्भर होने लगते हैं। उन्हें निर्णय लेने, समायोजन करने के अवसर अधिक मिलते हैं। वे प्रयास व भूल से बहुत कुछ स्वयं ही अनुभव प्राप्त कर लेते हैं।

बड़े होने के साथ–साथ बच्चे पास–पड़ौस में जाने लगते हैं। उनका प्रवेश विद्यालय में हो जाता है। इस प्रकार उनका परिचय मित्रमंडली, रिश्तेदारों, पड़ौसियों तथा शिक्षकों से होता है। इन सभी के आचार–विचार तथा मूल्यों का प्रभाव बच्चों पर पड़ने लगता है। इस प्रकार परिवार, समाज व विद्यालय का वातावरण व सम्पर्क में आने वाले लोगों के प्रभाव से बच्चे अपने नैतिक मूल्यों का सृजन करते हैं या उनके मूल्यों का अनुसरण करते हैं। घरेलू माताओं तथा कामकाजी माताओं के बच्चों को मिलने वाले वातावरण, सहयोग, अवसर, प्रशिक्षण में भिन्नता रहती है। दोनों प्रकार की महिलाओं के बच्चों के नैतिक मूल्यों में क्या अंतर है यह ज्ञात करने के लिये मैंने अपने शोध का विषय – 'घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन' चुना है।

उद्देश्य– मैंने अपने शोध कार्य हेतु निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किये हैं–

1. घरेलू महिलाओं के बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।
2. कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों का अध्ययन करना।
3. घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।

परिकल्पनाएँ – मैंने अपने शोध कार्य हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाएँ निर्मित की हैं–

1. घरेलू महिलाओं के बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
2. कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।
3. घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया जायेगा।

शोध प्रविधि– शोध अध्ययन हेतु ग्वालियर शहर की 150 घरेलू एवं 150 कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं का चयन सवविचार निदर्शन विधि से किया गया। तथ्यों का संकलन स्वनिर्मित प्रश्नावली के माध्यम से किया गया। सांख्यिकीय विश्लेषण हेतु माध्य, मानक विचलन, टी–परीक्षण का उपयोग किया गया। प्राप्त परिणामों के आधार पर प्रामाणित निष्कर्ष प्राप्त किये गये।

तथ्यों का वर्गीकरण– तथ्यों के वर्गीकरण को तालिका क्रमांक एक से तालिका क्रमांक छ: तक में प्रदर्शित किया गया है।

तालिका क्रमांक – 1: घरेलू महिलाओं के बालक–बालिकाओं के नैतिक मूल्यों का स्तर

स्तर	बालक		बालिकाएँ		योग	
	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.
उच्च	26	17.33	25	16.66	51	34.00
मध्यम	19	12.66	22	14.66	41	27.33
निम्न	30	20.00	28	18.66	58	38.66
योग	75	50.0	75	50.0	150	100.0

तालिका क्रमांक – 1 में घरेलू महिलाओं के बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों का स्तर प्रदर्शित किया गया है। तालिका से स्पष्ट होता है कि 26(17.33%) बालक तथा 25(16.66%) बालिकाओं के नैतिक मूल्यों का स्तर उच्च पाया गया है। मध्यम स्तर के नैतिक मूल्यों वाले बालक बालिकाओं में 19(12.66%) बालक तथा 22(14.66%) बालिकाएँ हैं। निम्न स्तर के नैतिक मूल्य अपनाने वाले बालकों की संख्या 30(20.0%)

तथा बालिकाओं की 28(18.66%) पाई गई है।

इस प्रकार घरेलू महिलाओं के 51(34.0%) बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों का स्तर उच्च, 41(27.33%) का मध्यम तथा 58(38.66%) का निम्न पाया गया है। उच्च नैतिक मूल्यों के स्तर में बालक बालिकाओं की संख्या में मामूली अंतर पाया गया है। बालकों की संख्या बालिकाओं की तुलना में अधिक है तथा मध्यम स्तर में बालिकाओं की संख्या बालकों की तुलना में अधिक पाई गई है। निम्न स्तर के मूल्यों को अपनाने में भी बालकों की संख्या बालिकाओं की तुलना में अधिक है।

तालिका क्रमांक – 2: कामकाजी महिलाओं के बालक–बालिकाओं के नैतिक मूल्यों का स्तर

स्तर	बालक		बालिकाएँ		योग	
	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.
उच्च	28	18.66	39	26.00	67	44.66
मध्यम	27	18.00	27	18.00	54	36.00
निम्न	20	13.33	09	06.00	29	19.33
योग	75	50.0	75	50.0	150	100.0

तालिका क्रमांक – 2 में कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों का स्तर प्रदर्शित किया गया है। तालिका से स्पष्ट है कि 28(18.66%) बालकों के मूल्यों का स्तर उच्च है जो कि उच्च स्तर के मूल्यों वाली बालिकाओं की संख्या 39(26.0%) की तुलना में कम है। मध्यम स्तर के मूल्यों वाले बालक बालिकाओं की संख्या एक समान अर्थात् 27(18.0%), 27(18.0%) पाई गई है। निम्न स्तर के मूल्यों के श्रेणी में 20(13.33%) बालक तथा 09(6.0%) बालिकाएँ हैं। अत: बालकों की संख्या बालिकाओं की तुलना में अत्यधिक है। सम्पूर्ण तालिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि 67(44.66%) बालक बालिकाओं के मूल्यों का स्तर उच्च, 54(36.0%) का मध्यम तथा 29(19.33%) का निम्न पाया गया है। इस प्रकार उच्च स्तर के मूल्यों वाले बालक बालिकाओं की संख्या सर्वाधिक तथा निम्न स्तर के मूल्यों वाले बालक बालिकाओं की संख्या न्यूनतम पाई गई है। यद्यपि उच्च स्तर की श्रेणी में बालिकाओं तथा निम्न स्तर की श्रेणी में बालकों की संख्या अधिक है।

तालिका क्रमांक – 3: घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के नैतिक मूल्यों का स्तर

स्तर	घरेलू महिलाएँ		कामकाजी महिलाएँ		योग	
	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.	संख्या	प्रति.
उच्च	51	17.00	67	22.33	118	39.33
मध्यम	41	13.66	54	18.00	95	31.66
निम्न	58	19.33	29	09.66	87	29.00
योग	150	50.0	150	50.0	300	100.0

तालिका क्रमांक – 3 में घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के नैतिक मूल्यों का तुलनात्मक स्तर प्रदर्शित किया गया हैं तालिका से स्पष्ट होता है कि घरेलू महिलाओं के बालक बालिकाओं 51(17.0%) के नैतिक मूल्यों का स्तर उच्च, 41(13.66%) का मध्यम तथा 58(19.33%) का निम्न पाया गया है। कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं में 67(22.33%) के नैतिक मूल्यों का स्तर उच्च, 54(18.0%) का मध्यम व 29(9.66%) का निम्न पाया गया है। घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के मूल्यों के स्तर का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि 118(39.33%) का स्तर उच्च, 95(31.66%) का मध्यम व 87(29.0%) का निम्न पाया गया है। इस प्रकार मूल्यों के उच्च स्तर के बालक बालिकाओं की संख्या सर्वाधिक तथा निम्न स्तर की न्यूनतम है। यद्यपि कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं की संख्या 67(22.33%) उच्च मूल्यों के स्तर में घरेलू महिलाओं के बालक बालिकाओं की तुलना में अधिक है तथा मूल्यों के निम्न स्तर की श्रेणी में घरेलू महिलाओं के बालक बालिकाओं की संख्या कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं की तुलना में अधिक है।

तालिका क्रमांक – 4: घरेलू महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक मूल्यों के स्तर के अंतर की सार्थकता हेतु टी–परीक्षण तालिका

लिंग	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्र्यांश	टी–परीक्षण का मूल्य	सार्थकता स्तर
बालक (N=75)	1.95	0.87	298	0.0953	p>0.05
बालिकाएँ (N=75)	1.96	0.85			

*0.05 तर पर सार्थक

तालिका क्रमांक – 4 में घरेलू महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक मूल्यों के स्तर के मध्यमान , मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का मूल्य प्रदर्शित किया गया है। तालिका दर्शाती है कि घरेलू महिलाओं के बालकों के नैतिक मूल्यों के स्तर का मध्यमान 1.95 है तथा बालिकाओं के नैतिक मूल्यों के स्तर का मध्यमान 1.96 है। तालिका दर्शाती है कि टी–परीक्षण का परिगणित मूल्य 0.0953 है। जो कि 0.05 स्तर पर असार्थक है। अत: शून्य परिकल्पना– 'घरेलू महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा' स्वीकृत होती है। बालक एवं बालिकाओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक का अंतर नहीं पाया गया।

तालिका क्रमांक – 5: कामकाजी महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक मूल्यों के स्तर के अंतर की सार्थकता हेतु टी–परीक्षण तालिका

लिंग	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्र्यांश	टी–परीक्षण का मूल्य	सार्थकता स्तर
बालक (N=75)	2.11	0.80	298	2.39	p<0.05
बालिकाएँ (N=75)	2.40	0.70			

*0.05 तर पर सार्थक

तालिका क्रमांक – 5 में कामकाजी महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक मूल्यों के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का मूल्य प्रदर्शित किया गया है। तालिका दर्शाती है कि कामकाजी महिलाओं के बालकों के नैतिक मूल्यों के स्तर का मध्यमान 2.11 है तथा बालिकाओं के नैतिक मूल्यों के स्तर का मध्यमान 2.40 है। तालिका दर्शाती है कि टी–परीक्षण का परिगणित मूल्य 2.39 है। जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक है। अत: शून्य परिकल्पना– 'कामकाजी महिलाओं के बालक एवं बालिकाओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा' अस्वीकृत होती है। बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक का अंतर पाया गया। बालिकाओं के नैतिक मूल्यों का स्तर बालकों की तुलना में उच्च पाया गया। क्योंकि बालिकाओं के नैतिक मूल्यों के स्तर का मध्यमान बालकों के मध्यमान

की तुलना में अत्यधिक है।

तालिका क्रमांक – 6: घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों के स्तर के अंतर की सार्थकता हेतु टी–परीक्षण तालिका

महिलाएँ	मध्यमान	मानक विचलन	स्वतंत्र्यांश	टी–परीक्षण का मूल्य	सार्थकता स्तर
घरेल (N=150)	1.95	0.85	298	–2.211	p<0.05
कामकाजी (N=150)	2.25	0.76			

*0.05 तर पर सार्थक

तालिका क्रमांक – 6 में घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों के मध्यमान, मानक विचलन एवं टी–परीक्षण का मूल्य प्रदर्शित किया गया है। तालिका दर्शाती है कि घरेलू महिलाओं के बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों के स्तर का मध्यमान 1.95 है तथा कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों के स्तर का माध्यम 2.25 है। तालिका दर्शाती है कि टी–परीक्षण का परिगणित मूल्य – 2.211 है जो कि 0.05 स्तर पर सार्थक है। अत: शून्य परिकल्पना– 'घरेलू एवं कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया जाएगा' अस्वीकृत होती है। बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक का अंतर पाया गया। बालिकाओं के नैतिक मूल्यों का स्तर बालकों की तुलना में उत्ताम पाया गया क्योंकि बालिकाओं के नैतिक मूल्यों के स्तर का मध्यमान बालकों के मध्यमान की तुलना में अत्यधिक है।

परिणाम – शोध अध्ययन के निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुये हैं–

1. घरेलू महिलाओं की बलिकाओं के नैतिक मूल्यों का स्तर बालकों के नैतिक मूल्यों के स्तर की तुलना में मामूली अधिक पाया गया।
2. कामकाजी महिलाओं की बालिकाओं के नैतिक मूल्यों का स्तर बालकों के नैतिक मूल्यों के स्तर की तुलना में उच्च पाया गया।
3. कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं केनैतिक मूल्यों का स्तर घरेलू महिलाओं के बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों के स्तर की तुलना में उच्च पाया गया।
4. घरेलू महिलाओं के बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
5. कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।
6. घरेलू महिलाओं एवं कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्यों में सार्थक अंतर पाया गया। कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के नैतिक मूल्य घरेलू मलिाओं के बालक बालिकाओं की तुलना में उच्च पाये गये।

निष्कर्ष– बालकाओं के मूल्य बालकों के मूल्यों की तुलना में उच्च स्तर के होते हैं। कामकाजी महिलाओं के बालक बालिकाओं के मूल्य घरेलू महिलाओं के बालक बालिकाओं की तुलना में उच्च स्तर के होते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची:–

1. बर्मन, गायत्री 'किशोरावस्था' शिवा प्रकाशन इन्दौर।
2. कपूर, प्रमिला, 'भारत में विवाह और कामकाजी महिलाएँ' राजकमल प्रकाशन 1976।
3. कुप्पूस्वामी, बी. 'बाल व्रूवहार और विकास' विकास पब्लिशिंग हाउस प्रा. लि. कानपुर।
4. भटनागर, सुरेश 'बाल विकास एवं बाल मनोविज्ञान' इन्टरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, मेरठ।
5. सलूजा तथा सलूजा 'कामाकजी महिलाएँ' पुस्तक महल, दिल्ली।
6. वर्मा प्रीति तथा श्रीवास्तव डी.एन. 'बाल मनोविज्ञान बाल विकास' विनोद पुस्तक मंदिर आगरा।

****